एक परिचय

श्री पीताम्बरा पीठ ः एक परिचय

भारतवर्ष के मध्यप्रदेश राज्य में ग्वालियर के निकट दतिया नामक स्थान है जो कि एक जिला मुख्यालय है। दतिया में श्री स्वामीजी महाराज ने श्री पीताम्बरा पीठ की स्थापना की थी जो कि एक सिद्ध पीठ है। दतिया रेल मार्ग से जुडा हुआ है तथा झांसी शहर से यहा दो घण्टे की बस यात्रा द्वारा पहुचा जा सकता है। प्रति वर्ष हजारों लोग यहां श्री पीताम्बरा पीठ में दर्शन हेतु आते हैं।

ब्रम्हलीन पूज्यपाद स्वामीजी महाराज द्वारा स्थापित दतिया स्थित श्री पीताम्बरा पीठ एक पूर्ण जागृत शक्ति पीठ है। जिस प्रकार वैज्ञानिक प्रयोगशाला में प्रयोग सिद्ध होते हैं ठीक उसी प्रकार श्री पीताम्बरा पीठ में मंत्र सिद्ध होते हैं चैतन्य होते हैं व उसी प्रकार फलदायक परिणाम प्राप्त होते हैं। यहां मंत्र शक्ति से उन असाध्य रोगों का निदान हुआ है जिन्हें विशेषज्ञ चिकित्सकों ने नकार दिया था। ब्रेन ट्यूमर, केंसर जैसी बीमारिया पूज्यपाद ने देखते देखते ठीक कर दीं।श्री पीताम्बरा पीठ में आकर अहसास होता है कि मंत्र शक्ति से सब कुछ पाया जा सकता है। पूज्यपाद ने अपनी प्रयोगशाला में सभी मंत्रों को सिद्ध कर रखा था। मंत्र शक्ति से यहां लोगों ने देखते ही देखते साफ आसमान में बादलों को उमडते घुमडते देखा है व घनघोर बारिश होते देखी है तो दूसरी ओर घनघोर बारिश को एकदम बंद होते भी देखा है ः क्षण भर में आसमान साफ। भयंकर कष्टों में फसे हुए दुःखी लोगों को खुशहाल होते देखा है।अतिकष्टदायक असाध्य रोगियों को रोगमुक्त होते देखा है। मुकदमों मे फंसे फांसी के झूलने में झूलने वालों को मुक्त होते देखा है। ऐसे एक दो नहीं अपितु सैकडों लोग हैं जिन्हें श्री स्वामीजी महाराज ने नवजीवन प्रदान कर सुपथ पर चलाया है। आज वे सभी अच्छे साधक हैं व ईश्वर भक्ति में लगकर आदर्श जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

भगवान् वनखण्डेश्वर नाथ

पुरातन नगरी दतिया में महाभारत काल का बना हुआ श्री वनखण्डेश्वर महादेवजी का मंदिर था जो उचित देखरेख के अभाव में जीर्ण अवस्था को प्राप्त हो रहा था। ऐसे ही समय में सन **23** दिसम्बर **1929** को पूज्यपाद श्री स्वामी जी इस स्थान पर अवतरित हुए। पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज के व्यक्तित्व, साधना, जप तप और परोपकारी स्वभाव के कारण जनमानस धीरे धीरे उनकी ओर आकृष्ट होता चला गया और सभी प्रकार के सभी श्रेणी के तथा सभी वर्गों के लोग इस स्थान पर आने लगे। जैसे जैसे लोगों की संख्या बढती चली गई वैसे वैसे इस स्थान की उन्नति होने लगी और स्थान धीरे धीरे बढने लगा। पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज ने सदैव ही इस स्थान को सार्व जनिक संपत्ति समझा और सभी व्यक्तियों को इस स्थान पर आने जाने, ठहरने तथा पूजा पाठ, जप तप व साधना का अधिकार प्रदान किया। यहां पर हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, श्रेष्ठी, निर्धन, स्त्री, पुरूष आदि में किसी प्रकार का भेद भाव नहीं समझा गया व सभी को अपने सामाजिक, मानसिक व चारित्रिक विकास के लिए पूज्यपाद श्री स्वामी जी से मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा।

समय समय पर यहां पर भक्तगण आकर अपनी श्रद्धा तथा क्षमता के अनुसार देवी देवताओं के मंदिरों का निर्माण कराते रहे व साधकों के ठहरने आदि के लिए साधकावास, साधना कुटीर आदि का निर्माण कराते रहे । अन्य भक्तगण अपनी भावनानुसार मंदिर की स्थाई निधि हेतु दान आदि देते रहे जिससे कि भविष्य में इस स्थान को आर्थिक कठिनाइयों का सामना न करना पडे। अन्य लोग मंदिर में नित्यप्रति की पूजा अर्चना तथा स्थानों के रखरखाव आदि के लिए दान देते रहे। कुछ भक्तगण पीताम्बरा माता व अन्य देवी देवताओं की मूर्तियों को अलंकृत करने हेतु सोने चांदी व अन्य धातुओं के आभूषण बर्तन आदि देते रहे। इस प्रकार प्राप्त धन दान दाताओं की इच्छानुसार एकत्रित व व्यय होता रहा है।

इस प्रकार इस पीठ स्थान का विस्तार होता रहा । पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज ने सदैव समस्त चल अचल संपत्ति व दान दक्षिणा आदि को पीठ स्थान की आराध्य देवी श्री पीताम्बरा माता की संपत्ति समझा तथा स्वयं को सेवक ही समझते रहे।यहाँ

समय समय पर योग्य व्यक्तियों को सेवा कार्य दिया गया जिससे वे इस सार्वजनिक स्थान की सेवाभाव से सेवा करते रहे तथा अपना उचित योगदान देते रहे। धीरे धीरे जब स्थान का आकार बढने लगा तो भविष्य के लिए आश्रम के प्रबन्ध पर विचार होने लगा। पूज्यपाद श्री स्वामी जी कहा करते थे कि हमारे गुरू ने गद्दी परम्परा रखने के लिए मना किया है अतः उत्तराधिकारी के रूप में किसी को भी गद्दी पर नहीं बिठाया जाएगा। साधू सन्यासियों को प्रबन्ध में सम्मिलित करने के सम्बन्ध में पूज्यपाद श्री स्वामी जी का विचार था कि "वर्तमान समय में साधुओं पर विश्वास करना कठिन है क्योकि प्रायः यह लोग गद्दी पर बैठकर पाखण्ड का विस्तार करते हैं जिससे मूल उद्देश्य समाप्त हो जाता है। मुझे तो सदगृहस्थ ही अच्छे लगते हैं जो निस्वार्थ भाव से सेवाकार्य करते हों"। अतः पूज्यपाद श्री स्वामी जी ने न्यास मण्डल में आश्रम का प्रबन्ध सुचारू रूप से चलाने के लिए गृहस्थों को ही सम्मिलित किया ।

पूज्यपाद श्री स्वामी जी तो संसार से सर्वथा विरक्त थे व उनका कहना था कि धन संपत्ति बढने से झंझट भी बढ जाते हैं तथापि भगवती पीताम्बरा माता की पूजा यथावत चलती रहे और आश्रम के सारे कार्य संपादित होते रहें इसके लिए उन्होने सेवकों द्वारा निवेदन करने पर संपत्ति संग्रह की अनुमति प्रदान की। इसी प्रकार पूज्यपाद श्री स्वामी जी आश्रम के स्वरूप को बढाने के पक्ष में नहीं थे किन्तु साधकों की सुविधा एवं लोक कल्याण की भावना से ही इस प्रकार के कार्यो की उन्होने अनुमति दी। पूज्यपाद श्री स्वामी जी कहा करते थे कि यहां पर पीताम्बरा माई साक्षात रूप से विराज रहीं हैं । यदि इसी प्रकार माई की पूजा होती रही तो वह यहां पर एक हजार वर्ष तक रहेंगी और उनकी कृपा से आश्रम के कार्य चलते रहेंगे तथा साधकों का कल्याण होता रहेगा।

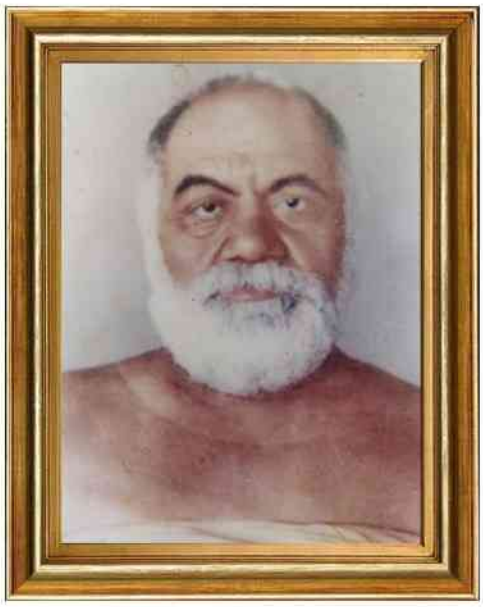

इस प्रकार लोक कल्याण की भावना से न्यास मण्डल का गठन किया गया । अब पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज ने इस पीठ के पूर्व नियोजित ट्रस्ट को लिखित रूप देने का निश्चय किया ताकि भविष्य में वे जब सशरीर इस पृथ्वी पर न हों तब इस स्थान के उद्देश्य तथा प्रबन्धन संबन्धी कोई कठिनाई न हों तथा कोई व्यक्ति इसे व्यक्तिगत लाभ के लिए उपयोग न कर सके। श्री गुरू महाराज की दिव्य दृष्टि ने समय को पहले ही जान लिया था तथा उसी के अनुरूप इस न्यास के विधान को लिखित रूप देकर **13** जुलाई **1977** को श्री पीताम्बरा पीठ रिलीजियस व चेरीटेबल ट्रस्ट के नाम से पंजीयन हेतु प्रस्तुत कर दिया गया तथा उप पंजीयक दतिया द्वारा **3** जून **1978** को इस ट्रस्ट को पंजीकृत कर लिया गया ।

इस पीठ के ट्रस्ट का उद्देश्य सदैव की परम्परानुसार आराध्य देवी श्री पीताम्बरा माता की नित्य विधिवत दीक्षित साधकों द्वारा सेवा पूजन करना व समय समय पर धार्मिक व सामाजिक उत्सवों व जयंतियों का आयोजन करना है। सभी वर्ग तथा संप्रदाय के व्यक्तियों को यहां ईश्वर की उपासना तथा भक्ति जप तप साधना करने की पूरी छूट है। यहा के पुस्तकालय में अमूल्य तथा अलभ्य पुस्तकों का संग्रह है और यह सार्वजनिक रूप से नियमानुसार सबके लिए उपलब्ध हैं। **न्यास के विधान में यह भी स्पष्ट रूप से निहित है कि इसे राजनीति से सर्वथा पृथक रखा जाना अनिवार्य होगा।**

उचित प्रबन्ध के लिए न्यासियों का एक न्यास मंडल बनाया गया जिसमें निम्न न्यासी थे ः

1 श्रीमति विजयाराजे सिंधिया	**2** श्री रामनारायण वैद्य	**3** श्री सूर्यदेव शर्मा	**4** श्री हरीराम सांवला
5 श्री माणिकचंद शर्मा	**6** श्री रामकृष्ण वर्मा	**7** श्री बाबूलाल बूबना	**8** श्री ललिता प्रसाद शास्त्री

प्रबन्ध तथा नित्यप्रति के कार्यो के लिए श्री सूर्यदेव शर्मा मंत्री तथा श्री हरीराम सांवला कोषाध्यक्ष बनाए गए। यह पदाधिकारी न्यास को लिखित रूप प्रदान किए जाने के पहले से ही इन पदों पर आसीन थे। पीठ के समस्त आय व्यय का पूर्ण ब्यौरा नियमित रूप से रखा जाता है तथा उसे अधिकृत चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट द्वारा ऑडिट कराया जाता है। पीठ का समस्त धन भारत की अधिकृत बैंको में रखा जाता है तथा सोने चांदी के आभूषण व बर्तन आदि बैंक के लॉकर में सुरक्षित रखे जाते हैं। पीठ के न्यास मण्डल की प्रत्येक मीटिंग की कार्यवाही पूर्ण रूप से लिखी जाती है तथा उस पर अध्यक्ष महोदय के हस्ताक्षर होते हैं। पीठ के न्यास के हिसाब को नियमानुसार आयकर के लिए भी प्रस्तुत किया जाता है तथा आय की विवरणी भी प्रस्तुत की जाती है।

यद्यपि पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज शारीरिक रूप से हम लोगों के बीच नहीं हैं फिर भी न्यास मण्डल के सभी न्यासी उनकी उ पस्थिती का अनुभव करते हैं तथा उनके दिखाए मार्ग पर चलने का प्रयास करते हैं ।

पूज्यपाद की अदभुत साधना

पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज भगवती पीताम्बरा के उपासक थे। वह जीवन पर्यन्त साधना में लीन रहे। साधना के समय में किसी से बातचीत करना उन्हें पसन्द नहीं था। उनका समय विभाजित था और वे निर्धारित समय पर साधना के अतिरिक्त कोई कार्य नहीं करते थे।दिन के अतिरिक्त रात्रि के शून्यकाल में वह साधना में तल्लीन रहते थे। रात्रि में वह एक बजे उठ कर साधना में लग जाते थे। इस कार्य को वह इतना महत्वपूर्ण समझते थे कि अपने शारीरिक स्वास्थय पर भी ध्यान नहीं देते थे।उनकी साधना का कम अत्यधिक अस्वस्थता में ही भंग होता था। भगवती पीताम्बरा के अतिरिक्त अन्य सभी महाविद्याओं की वह उपासना करते थे। यह गूढतम रहस्य वह कभी प्रकट नहीं करते थे व कभी कभी ही यह रहस्य आश्रम के सेवकों पर प्रगट हो पाता था। पूज्यपाद श्री स्वामी जी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे । वह व्याकरण दर्शन तथा तंत्र के अगाध पांडित्य से परिपूर्ण थे । इन शास्त्रों के अतिरिक्त ज्योतिष वेद पुराण आदि सभी शास्त्रों में उनको पूर्ण गति थी। समस्त शास्त्र उन्हें हस्तामलकवत थे व कंठस्थ थे। जिस विषय का एक बार वह अवलोकन कर लेते थे वह उन्हें जीवन पर्यन्त याद बना रहता था।

संस्कृत भाषा का प्रेम

पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज का संस्कृत भाषा के प्रति सहज अनुराग था । वह संस्कृतज्ञ विद्वानों से मिलकर प्रसन्न होते थे। संस्कृत पढने की प्रेरणा वे समस्त भक्तों को दिया करते थे तथा संस्कृत की उन्नति के लिए सदा प्रयत्नशील रहते थे। मध्यप्रदेश में पहले संस्कृत परीक्षाओं को कोई मान्यता नहीं थी पर पूज्यपाद श्री स्वामी जी की प्रेरणा से उनके शिष्य पण्डित सूर्यदेव शर्मा ने इस दिशा में प्रयत्न किया और सफलता प्राप्त की। पूज्यपाद श्री स्वामी जी की दिनचर्या में समय का कठोरता से पालन किया जाता था परन्तु संस्कृतज्ञ विद्वानों से मिलने में उनके नियम में शिथिलता भी आ जाती थी।

सर्व धर्म समन्वय

पूज्यपाद श्री स्वामी जी धार्मिक विषयों पर बहुत उदार थे । आश्रम पर सभी धर्मो के लोग आते रहे हैक्त । पूज्यपाद श्री स्वामी जी इन लोगों से उन्ही के धर्म की बात करते थे। सिख जैन ईसाई व मुस्लिम धर्मो के अनेक धर्मावलम्वी व्यक्ति पूज्यपाद श्री स्वामी जी के सम्पर्क में आए तथा उनके शिष्य हुए।

विविध भाषाओं का ज्ञान

पूज्यपाद श्री स्वामी जी का संस्कृत भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं पर भी समान अधिकार था। वह बहुभाषाविद थे व उन्हें इतनी भाषाओं का ज्ञान होना एक अलौकिक चमत्कार ही था। अंग्रेजी, उर्दू , अरबी भाषाओं के अलावा पाली, प्राकृत भाषाओं का भी पूज्यपााद को पूर्ण ज्ञान था।वह प्रादेशिक भाषाओं के संपर्क में भी रहे व इन भाषाओं के ग्रन्थों के पठन पाठन का कार्य भी चलता ही रहता था। प्रादेशिक भाषाओं में बंगाली, मराठी, गुजराती व पंजाबी भाषाओं का ज्ञान उन्हें था। विभिन्न प्रदेशों के व्यक्तियों के आश्रम में आने पर उनके बहुभाषाविद होने का प्रमाण मिलता था।

शास्त्रीय संगीत के महान ज्ञाता

पूज्यपाद श्री स्वामी जी शास्त्रीय संगीत के महान मर्मज्ञ थे । आश्रम पर देश के प्रसिद्ध गायक व वादक आया ही करते थे । उनके गायन वादन की बारीकियां पूज्यपाद शिष्यों को बताया करते थे। आश्रम पर आने वाले संगीतज्ञ पुज्यपाद के संगीत ज्ञान से प्रभावित होकर नतमस्तक हो जाया करते थे। झांसी के सुप्रसिद्ध गायक उस्ताद आदिल खां तो पूज्यपाद के शिष्य ही हो गए थे और गुरू कृपा से उनकी गई हुई आवाज पुनः लौट आई थी। आश्रम पर आने वाले संगीतज्ञों में पण्डित गुदई महाराज, सियाराम तिवारी, राजन साजन मिश्र, डागर बन्धू, निखिल बैनर्जी, सलिल शंकर, बहादुर खां, पवार बन्धू, खान बन्धू व कुमार गंधर्व आदि प्रमुख हैं। देश के शास्त्रीय संगीत के सुप्रसिद्ध विद्वान आचार्य वृहस्पति पूज्यपाद से ही दीक्षित थे।

भगवती पीताम्बरा की स्थापना

पूज्यपाद श्री स्वामी जी ने सर्वपथम भगवती पीताम्बरा माता की स्थापना संवत **1992** में की तथा तभी से यह आश्रम पीताम्बरा पीठ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। पूज्यपाद श्री स्वामी जी के अनुग्रह से अनेक भक्त भी इस साधना की ओर अग्रसर हुए। पूज्यपाद श्री स्वामी जी भगवती पीताम्बरा विषयक समस्त साहित्य "बगलामुखी रहस्यम" नामक ग्रंथ में प्रकाशित कराया। यह ग्रन्थ अपने ढंग का एक ही है।इस विलक्षण ग्रन्थ का देश के सभी भागों में साधकों व विद्वतजनों में आदर हुआ है। भगवती पीताम्बरा विषयक सभी साहित्य इस ग्रन्थ में एकत्रित है। पीठ की स्थापना के पश्चात पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज ने तांत्रिक विधि तथा पद्धति द्वारा अर्चन पूजन का विधान प्रचलित कराया जो आज तक अविछिन्न रूप से चल रहा है। पूज्यपाद श्री स्वामी जी का कथन था कि यदि इसी प्रकार पूजा अर्चना होती रही तो पीताम्बरा माई यहा साक्षात निवास करती रहेंगी तथा साधकों का कल्याण होता रहेगा।

श्री यंत्र की स्थापना

पूज्यपाद श्री स्वामी जी ने आश्रम के अन्दर एक कक्ष में चाँदी पर श्री चक की स्थापना की। इसमें कुछ सीमित साधकों को शामिल किया गया था तथा यहा पर भी शास्त्रोक्त विधि से पूजन अर्चन का कार्य प्रारम्भ किया गया ।श्री चक का महत्व तो साधकों को विदित ही है । पूज्यपाद श्री स्वामी जी के समय में जो साधक आते रहे उनको पूज्यपाद श्री स्वामी जी की आज्ञा से श्री चक के दर्शन का लाभ प्राप्त होता रहा । अर्चन को सुदृढ बनाने के उद्देश्य से पूज्यपाद श्री स्वामी जी ने श्री चक पूजा विधि का निर्माण किया तथा इस सम्बन्ध में एक ग्रन्थ प्रकाशित भी कराया।

भगवान परशुराम की स्थापना

भगवान परशुराम शाक्त धर्म के आचार्य हैं तथा भगवती पीताम्बरा के साधकों में अग्रणी हैं। इनके द्वारा विरचित "परशुराम कल्पसूत्र" ग्रन्थ का शाक्त संप्रदाय में बडा आदर है। पूज्यपाद श्री स्वामी जी ने इसी कारण भगवान परशुराम का मंदिर संवत **2020** में बनवाया था तथा उनकी स्थापना की। भगवान परशुराम से संबंधित कुछ साहित्य भी प्रकाशित हुआ है जिसमें रेणुका तंत्रम प्रमुख है। यह ज्ञातव्य है कि भगवान परशुराम के मंदिर देश में कुछ ही स्थानों पर हैं।

यज्ञ शाला का निर्माण

आश्रम में यज्ञ हवन आदि होते ही रहते थे अतः यज्ञ कर्मों के संपादन के लिए यज्ञशाला की आवश्यक्ता थी। चीन के आक्रमण के समय हुए राष्ट्र रक्षा अनुष्ठान के अवसर पर पंचकुण्डी यज्ञशाला का निर्माण हुआ। इसमें पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पांच तत्त्वों के आधार पर पांच कुण्डों का निर्माण किया गया है। इसके निर्माण के बाद आश्रम में संपन्न होने वाले हवन आदि कर्म यहीं पर होते हैं।

महाकाल भैरव की स्थापना

नाद तत्त्व के अधिष्ठाता महाकाल भैरव की मूर्तियां बहुत कम देखने में आती हैं । पूज्यपाद श्री स्वामी जी की प्रेरणा से आश्रम पर महाकाल भैरव की स्थापना की गई। स्थापना के समय से ही प्रति रविवार को सायंकाल में संगीत सभा का आयोजन होता है क्योंकि यह संगीत के देवता भी हैं।

महानिर्वाण दिवस

पूज्यपाद श्री स्वामीजी के ब्रम्हलीन हो जाने के बाद प्रतिवर्ष ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी को निर्वाण दिवस मनाया जाता है। मध्यान्ह में वार्षिक श्राद्ध अर्थात आराधना कम शास्त्रीय विधि से होता है। सन्यासी का पूजन होता है तथा उन्हें भोजन कराया जाता है। इस अवसर पर पूज्यपााद के बहुत से शिष्य उपस्थित रहते हैं। सायंकाल से सभा का आयोजन होता है जिसमें पूज्यपाद श्री स्वामीजी से संबन्धित संस्मरण सुनाए जाते हैं तथा गुरू तत्व पर चर्चा होती है।

पुस्तकालय की स्थापना

पूज्यपाद श्री स्वामी जी का ग्रन्थों के प्रति बडा मोह था। उन्होने धीरे धीरे ग्रन्थों का संकलन किया जिसने बाद में वृहत पुस्तकालय का रूप धारण कर लिया। वर्तमान में पुस्तकालय में वेद, व्याकरण, दर्शन, तन्त्र, ज्योतिष, पुराण आदि के दुर्लभ ग्रन्थ संग्रहित हैं। तन्त्र का संग्रह तो अपूर्व ही है। इनमें से अधिकतर ग्रन्थ तो अब प्रकाशकों के यहां भी उपलब्ध नहीं हैं।

षडाम्नाय शिव की स्थापना

तन्त्र शास्त्र में आम्नायों का महत्व सर्वविदित ही है। षडाम्नाय शिव की स्थापना भी देश में कहीं दिखाई नहीं देती है। पूज्यपाद श्री स्वामी जी की प्रेरणा से वनखण्डेश्वर के प्राचीन मंदिर में षडाम्नाय शिव की स्थापना सन **1980** में की गई। शद्योजात, वामदेव, तत्पुरूष, अगोर, ईशान तथा नीलकण्ठ शिव की प्रतिमाए दर्शनीय हैं।

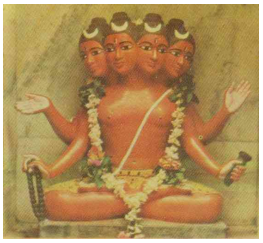
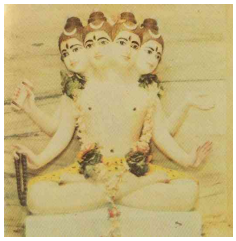
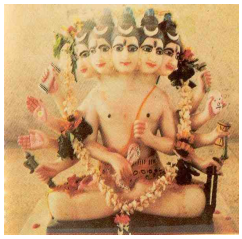

संस्कृत परिषद की स्थापना

पूज्यपाद श्री स्वामी जी की प्रेरणा से आश्रम में सन **1958** में पीताम्बरा संस्कृत परिषद की स्थापना की गई। परिषद के द्वारा संस्कृत के प्रचार के लिए निःशुल्क अथ्यापन कार्य किया जाता रहा है व संस्कृत के दुर्लभ ग्रन्थों का प्रकाशन कार्य भी चल रहा है।परिषद द्वारा अबी तक पचास ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है तथा विभिन्न प्रकार के स्त्रोतो कीं संख्या तो बहुत है।परिषद द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों को प्रचार प्रसार के लिए मात्र लागत मूल्य पर बेचा जाता है। संस्कृत ग्रन्थों के प्रकाशन में पीठ का महत्वपूर्ण स्थान है।संस्कृत भाषा के ग्रन्थों का हिन्दी व अंग्रेजी भाषाओं में अनुवाद भी किया गया है।पूज्यपाद श्री स्वामी जी द्वारा विरचित सिद्धान्त रहस्य नामक पुस्तक का तो गुजराती, मराठी व अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है। परिषद द्वारा वेद योग, वेदांग ज्योतिष, तंत्र आदि विषयों पर ग्रन्थ प्रकाशित किए गए हैं। वर्तमान में पूज्यपाद श्री स्वामी जी द्वारा विरचित उपनिषदों पर प्रकाश भाष्य का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया गया है।शाक्त धर्म का महत्वपूर्ण ग्रन्थ ललिता सहस्त्र नाम भास्कर राय टीका सहित भी प्रकाशित किया गया है। अनेक ग्रन्थों के प्रकाशन की योजना निरन्तर चलती रहती है।

तारापीठ की स्थापना

दतिया नगर के निकट पंचम कवि की टोरिया नामक प्राचीन सिद्ध स्थान है। यहाँ पर भैरव जी एवं शंकर जी के प्राचीन मंदिर हैं। इस स्थान पर पूज्यपाद श्री स्वामी जी की प्रेरणा से भगवती तारा माई की स्थापना की गई। यह एकान्त स्थान साधना के लिए बहुत उपयुक्त है।

राष्ट्र रक्षा अनुष्ठान यज्ञ

पूज्यपाद श्री स्वामी जी का राष्ट्र के प्रति अगाध प्रेम था। वे राष्ट्रीय कर्तव्य को सर्वोपरि मानते थे । चीन के आकमण के समय उनका मन अशांत रहता था तथा उन्होने आकमण को विफल करने के लिए एक वृहद अनुष्ठान की योजन बनाई थी। उनकी योजना के अनुसार सौ तांत्रिक विद्वानों की आवश्यक्ता थी किन्तु पूरे देश से अस्सी तांत्रिक पण्डित ही उपलब्ध हुए। पूज्यपाद

श्री स्वामी जी ने कहा इतने लोगों से ही काम चल जाएगा। पूज्यपाद श्री स्वामीजी ने स्वयं एक वृहद संकल्पा तैयार किया। इस यज्ञ में वाराणसी के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री केदारनाथ जैटली को आचार्य बनाया गया। दिन में सहस्त्रचण्डी यज्ञ होता था तथा अनुष्ठान के अंगभूत मंत्रों का जाप होता था। रात्रि में 10 बजे से प्रातः 4 बजे तक धूमावती माई का अनुष्ठान होता था। उसी दिन शिवा की आवाज सुनाई दी। पूज्यपाद श्री स्वामीजी से निवेदन किया गया व तुरन्त अगले दिन से शिवाबलि की व्यवस्था कर दी गई। आश्रम के बाहर सूखे हुए तालाब में यह विधि की जाती थी और बलि प्रदान करने के पश्चात शीघ्र ही शिवा बलि भक्षण करने आती थी।इस चमत्कार को रात्रि में अनुष्ठान करने वाले सभी पण्डित देखते थे। अनुष्ठान के समय अनुष्ठान में लगे हुए पण्डितों को अनेक प्रकार के अनुभव होते थे। वे लोग पूज्यपाद श्री स्वामीजी से निवेदन करते थे और पूज्यपाद श्री स्वामीजी के निर्देशानुसार विधि में परिवर्तन होता रहता था। अनुष्ठान को प्रचार प्रसार से पूर्णतः अलग रखा गया था। आश्रम में सेवा कार्य में लगे लोग तथा पण्डित गण ही रहते थे तथा अन्य दर्शनार्थियों का आना पूर्णतः निषिद्ध था। पूज्यपाद श्री स्वामीजी की कृपा से अनुष्ठान समय में पूर्ण शांति रही और अनुष्ठान कार्य निर्विघ्न संपन्न हुआ। अनुष्ठान के लिए किसी प्रकार का चन्दा आदि एकत्रित नहीं किया गया था।अनुष्ठान प्रारम्भ होने पर यह अनुष्ठान एक माह तक चला। पूर्णाहुति के दिन ही चीन ने अपनी सेनाएँ वापिस बुलाने की घोषणा कर दी। यह अनुष्ठान की सफलता का द्योतक था। इस युग में राष्ट्र हित में किया जाने वाला यह सफल अनुष्ठान तान्त्रिक जगत की महती उपलब्धि थी।

ब्रह्म यज्ञ का आयोजन

पूज्यपाद श्री स्वामी जी के जीवन काल में ब्रम्ह यज्ञ का आयोजन अपूर्व ही था। इस यज्ञ में भारत वर्ष के उस समय उपलब्ध सभी वेद की शाखाओं का वाचन किया गया था। समस्त देश से वैदिक विद्वान बुलाए गए थे। यह आयोजन छत्तीस दिनों तक चला था। एक वेद की समस्त शाखाओं के वाचन के लिए नौ दिनों का समय निर्धारित किया गया था। यज्ञ में सम्मिलित विद्वानों के अनुसार ऐसा यज्ञ बहुत काल, संभवतः महाभारत काल से नहीं हुआ था तथा भविष्य में भी ऐसा आयोजन कष्ट साध्य है क्योंकि दिनों दिन वेद पाठी ब्राम्हणों का लोप होता जा रहा है।

भगवती धूमावती की स्थापना

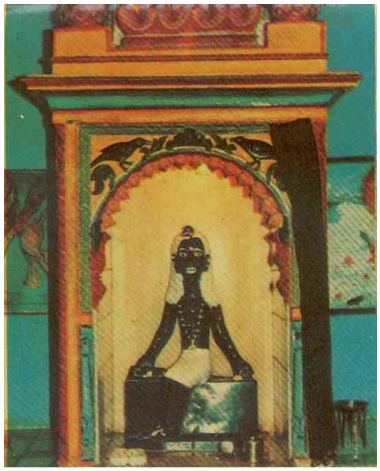

दस महाविद्याओं में उल्लिखित भगवती धूमावती के मंदिर भी बहुत कम उपलब्ध होते हैं। चीन के आक्रमण के समय में हुए राष्ट्र रक्षा अनुष्ठान के समय में भगवती धूमावती का आवाह्यन किया गया था। यज्ञ की सफलता के पश्चात पूज्यपाद श्री स्वामी जी का विचार भगवती धूमावती की स्थापना का था। कालान्तर में भगवती धूमावती के मंदिर का निर्माण सन 1978 में पूज्यपाद श्री स्वामीजी के ब्रम्हलीन होने से ठीक एक वर्ष पूर्व किया गया तथा भगवती की स्थापना की गई। भगवती धूमावती से संबंधित साहित्य का संकलन भी किया गया । भगवती धूमावती दस महाविद्याओं में सबसे उग्र मानी जाती हैं व इनका एक नाम ज्येष्ठा भी है। इन्होने भगवान शिव को भी निगल लिया था इसलिए इनके ध्यान में इनका विधवा रूप है। प्रायः शत्रु पीडा से निवृत्ति के लिए इनका अनुष्ठान होता है। यह शत्रु का उच्चाटन कर देती हैं और भक्तों की रक्षा करती हैं।पीठ पर स्थापना के पश्चात इनकी विधिवत पूजा प्रतिदिन की जाती है। अनेक साधक मंदिर के पास बैठकर साधना करते हैं।वास्तव में इनका रौद्र रूप तो शत्रुओं के लिए है पर भक्तों पर तो यह दयामयी ही हैं। भगवती धूमावती के दर्शन आश्रम में प्रतिदिन प्रातःकाल पूजा के समय एवं सायंकाल कुछ क्षणों के लिए ही होते हैं व शेष समय विग्रह पर पर्दा पडा रहता है। यह नियम इनके उग्र ध्यान के कारण प्रचलित किया गया है।

प्रमुख पर्व

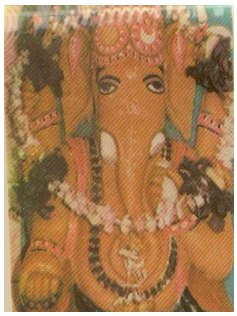

आश्रम प्रमुख पर्वों में दोनों नवरात्र तथा गुरू पूर्णिमा एवं महानिर्वाण दिवस प्रमुख हैं। नवरात्र में स्थानीय व बाहर के साधक यहाँ रह कर साधना करते हैं। शाक्त मत में नवरात्र का समय साधना के लिए विशेष उपयोगी माना जाता है।नवमी को सामूहिक हवन होता है। गुरूपूर्णिमा पर पूज्यपाद श्री स्वामी जी के चरणों की पूजा की जाती है जिसमें पूज्यपाद श्री स्वामी जी प्रायः सभी शिष्य सम्मिलित होते हैं। इनके अलावा बसंत पंचमी का पर्व भी सोत्साह मनाया जाता है। प्रातःकाल सरस्वती पूजन होता है तथा सायंकाल में शास्त्रीय संगीत की स्वर लहरियों से आश्रम गुंजरित हो जाता है।

ज्योतिषमती औषधि

पूज्यपाद श्री स्वामी जी सभी रोगों पर ज्योतिषमती औषधि प्रदान करते थे।यद्यपि यह औषधि विशेषकर नेत्र तथा स्मृति रोगों में लाभ पहुँचाती है परन्तु पूज्यपाद श्री स्वामी जी सभी प्रकार के रोगों पर इसका प्रयोग करते थे तथा अनेक प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि इसी एक औषधि से विभिन्न रोगों वाले व्यक्ति स्वस्थय हुए हैं। वास्तव में यह उनक अनुग्रह ही है। आज इस औषधि का महत्व बहुत बढ गया है तथा दूर दूर से रोगी इस औषधि को प्राप्त करने के लिए आश्रम पर आते हैं।

मल्लशाला

आश्रम में एक अकाडा भी है जहाँ लोग कसरत आदि करते हैं। पूज्यपाद श्री स्वामी जी स्वयं इस विद्या के अच्छे ज्ञाता थे। इस विषय में वह समय समय पर ज्ञान देते रहते थे। यह अखाडा आश्रम का ही अंश है। आज भी यहाँ पर बहुत लोग मल्लविद्या सीखने आते हैं।

संस्कृत विद्यालय

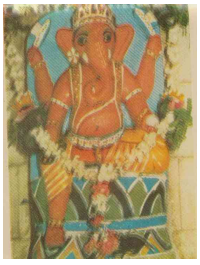

पूज्यपाद श्री स्वामी जी आजीवन संस्कृत के प्रचार प्रसार में लगे रहे । वे स्वयं में ही एक विद्यालय थे। उन्होने शतशः छात्रों को संस्कृत का अथ्ययन कराया व अनेक शास्त्री, आचार्य, परीक्षोतीर्ण छात्रों ने श्री चरणों से अथ्ययन किया। आश्रम में पूज्यपाद के शिष्य बालकों को निःशुल्क अथ्ययन कराते थे । अब वर्तमान में पूज्यपाद श्री स्वामी जी के कार्यो को और अधिक गतिशील बनाने के उद्देश्य से एक संस्कृत विद्यालय की स्थापना की योजना चल रही है। विद्यालय में वेद तथा तंत्र के अथ्यापन को प्रमुखता दी जाएगी।

कर्मकाण्ड का प्रचार

पूज्यपाद श्री स्वामी जी कर्मकाण्ड के पक्षपाती थे । वर्तमान समय में इस विषय पर जो न्यूनत आती जा रही है उससे वे चिंतित रहते थे। उन्होने आश्रम पर कर्मकाण्ड की अनेक विधियाँ प्रचलित कराई व साथ ही अनेक शिष्यों को इस शास्त्र में निपुण किया।कर्मकाण्ड विधिवत शास्त्रीय विधान के अनुसार हो इस बात पर वह जोर दिया करते थे। कर्मकाण्ड के नियमों में ढलि दिए जाने के पक्ष में वह नहीं रहते थे। आश्रम में समय समय पर विभिन्न प्रकार के कर्मकाण्ड के कार्य होते रहते थे । नवरात्र

में शतचण्डी, श्रावण में उपाकर्म, वैशाख में सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार आदि विधियाँ सतत होती रहती थीं। देव कर्मकाण्ड के अतिरिक्त वह पितृ संबन्धी कर्मकाण्ड पर भी बहुत जोर देते थे। उनके अनुसार श्राद्धादि कर्म मनुष्य को हमेशा करते रहना चाहिए। जो श्राद्ध करते हैं उनके वंश में योग्य सन्तान होती हैं।

पूजा पद्धति

आश्रम में स्थापित सभी देवताओं के पूजन की व्यवस्था विधि पूर्वक होती है। विशेषतः भगवती पीताम्बरा माई की पूजा प्रतिदिन तांत्रिक पूजा पद्धति से होती है व पात्र स्थापन आदि होता है। यह पद्धति भगवती के स्थापना समय से अनवरत चली आ रही है। पूरे समय में इस व्यवस्था में कोई व्यतिक्रम नहीं आया है।पूज्यपाद श्री स्वामीजी इस प्रकार के अर्चन पर बहुत जोर देते थे।भारतवर्ष के किसी अन्य मंदिर में ऐसी अर्चन पद्धति दिखाई नहीं देती है।पूज्यपाद श्री स्वामीजी कहा करते थे कि जब तक इस प्रकार अर्चन होता रहेगा तब तक मूर्ति में देवत्व बना रहेगा। पुजा पद्धति का प्रणयन स्वयं पूज्यपाद श्री स्वामीजी ने किया था। पर्वों पर तथा पांच विशेष तिथियों पर श्री चक्रार्चन भी पद्धति के अनुसार होता है।अन्यत्र इस प्रकार के अविच्छिन्न अर्चन का कोई उदाहरण नहीं मिलता है। पूजा व्यवस्था भविष्य में ठीक से चलती रहे इस हेतू पूज्यपाद श्री स्वामीजी ने दस व्यक्तियों को इस कार्य में नियुक्त किया है। ये सभी पूज्यपाद के शिष्य हैं और पूजन विधि में पारंगत हैं। यह इसे अपना कर्तव्य समझ कर दत्तचित्त होकर अर्चन करते हैं।

शास्त्रीय मर्यादा

पूज्यपाद श्री स्वामीजी पूर्णतः शास्त्रीय मर्यादा के पक्षपाती थे । आश्रम पर सभी विधिया शास्त्र को प्रमाण मान कर प्रचलित की गई। पूज्यपाद श्री स्वामीजी शास्त्र मर्यादा के विरूद्ध किसी कार्य को पसंद नहीं करते थे। उनका धर्म शास्त्र का ज्ञान विलक्षण था। आश्रम पर विभिन्न विषयों पर शास्त्रीय निर्णय जानने के लिए लोग आते रहते थे। आज भी आश्रम में प्रत्येक कार्य में शास्त्र मर्यादा देखी जा सकती है।आश्रम के दो ही कार्य प्रमुख थे ः साधना करना अथवा शास्त्र चिंतन करना ।इस युग में शास्त्रीय मर्यादा की स्थापना पूज्यपाद श्री स्वामीजी का महान कार्य है।

साधना का महत्व

पूज्यपाद श्री स्वामीजी साधना को सर्वोच्च महत्व देते थे। उन्होने अपना समग्र जीवन साधना व शास्त्र चिंतन में व्यतीत किया। सहस्त्रों साधकों को साधना मार्ग की ओर प्रेरित किया। आश्रम पर साधक गण दिन रात गुरूपदिष्ट साधना में तल्लीन रहते थे और रहते हैं। उनके समय में सकामी अनुष्ठान भी होते रहते थे। पूज्यपाद श्री स्वामीजी का कथन था कि यद्यपि सकामी अनुष्ठान करना साधना का लक्ष्य नहीं है तथापि यदि शास्त्र विहित मार्ग से लोगों का कष्ट निवारण होता है तो उनकी श्रद्धा शास्त्र के प्रति दृढ हो जाती है तथा वे साधना का महत्व समझने लगते हैं। आज भी आश्रम में बडी संख्या में साधक आते हैं और वे शांति पूर्वक साधना में अपना समय व्यतीत करते हैं।पूज्यपाद श्री स्वामीजी ने यह सिद्ध करके दिखा दिया कि साधना से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है।पूज्यपाद श्री स्वामीजी ने साधकों की रूचि एवं उनकी योग्यता के अनुसार अलग अलग उपदेश दिए हैं। समग्र साधना शास्त्रअनुमोदित है।

जयन्ती कार्यक्रम

आश्रम में पूज्यपाद श्री स्वामीजी के समय ही वैशाख शुक्ल **3** से **5** तक भगवान परशुराम भगवती पीताम्बरा माता व जगदगुरू शंकराचार्य की जयन्तियों का आयोजन किया जाता है। भगवान परशुराम शाक्त मत के आचार्य माने जाते हैं। इनके द्वारा विरचित "परशुराम कल्प सूत्र" नामक ग्रन्थ शाक्त मत का प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है। इनकी गणना भगवान के अवतारों में होती है। इनकी माता रेणुका के साधक भी यत्र तत्र मिल जाते हैं। भगवती पीताम्बरा माता दस महाविद्याओं में हैं। यह भी कुल की महाविद्या हैं व इनको सिद्ध विद्या भी कहा गया है।इनकी उपासना से साधक को सब कुछ प्राप्त हो जाता है।पूज्यपाद श्री स्वामीजी इन्हीं के उपासक थे । जगदगुरू शंकराचार्य भगवान शंकर के अवतार थे। उन्होने हिन्दू संस्कृति की रक्षा की व उ नका अद्वैत सिद्धान्त आज भी अप्रतिम माना जाता है। आश्रम में यह तीनों जयंतिया एक साथ मनाई जाती हैं।प्रातःकाल पूजन अभिषेक आदि होता है व सायंकाल में विद्वानों के प्रवचन होते हैं। जयंतियों में प्रवचन के लिए अखिल भारतीय स्तर के विद्वानों को आमंत्रित किया जाता है।प्रवचनों से लाभान्वित होने के लिए बडी संख्या में श्रोतागण उपस्थित होते हैं।सभी कार्य क्रम बडी शालीनता से संपन्न होते हैं तथा सभी उपस्थित जन समुदाय को प्रसाद वितरण किया जाता है। पूज्यपाद श्री स्वामीजी की कृपा से इतने बडे समारोहों में किसी प्रकार की अव्यवस्था दिखाई नहीं देती है। पूज्यपाद श्री स्वामीजी के ब्रम्हलीन होने के पश्चात भी उसी रूप में प्रतिवर्ष जयन्ती समारोह संपन्न होता है। मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में एकादशी को इसी प्रकार गीता जयन्ती का आयोजन भी प्रतिवर्ष होता है।